शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 95-108

असम की जेमे नागा जनजाति : समाज और संस्कृति

केदेईरेईहुंगले रियमे (अहूंग)

शोध-सार

विविधता में एकता भारतवर्ष की एक प्रमुख विशेषता है । नागा जनजाति भारत की एक प्रमुख जनजाति है । इनका निवास-क्षेत्र भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र व म्यांमार के पश्चिमोत्तर क्षेत्र है । मणिपुर, असम, अरुणाचल प्रदेश में भी इनकी अच्छी खासी जनसंख्या है। नागा समुदाय के अन्तर्गत जेमे नागा प्रमुख जनजाति है । जेमे नागा जनजाति अपनी पारंपरिक संस्कृति और परंपरा के धनी है । जेमे का क्षेत्र मेघालय की सीमा तक विस्तृत है। पश्चिमी जेमे क्षेत्रों में उनके पड़ोसी बाएटे, ह्रांगखल और डिमाचा आते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से डिमाचा और जेमे जनजाति एक दूसरे के करीब है। डिमाचा और जेमे समूह द्वारा किए गए संस्कार और अनुष्ठानों में कई समानताएँ पाई जाती हैं । जेमे नागा बंगलावांग और उसकी संतानों द्वारा ब्रह्मांड के निर्माण की कहानी और सुधार के दिनों में जेमे नागा की बहुदेववादी धार्मिक परंपराओं की जड़ें कई मायनों में डिमाचा के समान हैं। दोनों जनजातियों के विभिन्न देवताओं के नाम और उन देवताओं को दिए गए वर्ण भी समान हैं। पर राजनीतिक रूप से दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। किसी जमाने में डिमाचा उनके सम्राट के अधीन हुआ करते थे। वे अन्य नागा जनजातियों की तरह शुरू से ही ग्राम गणराज्य के लोग रहे हैं। 19 वीं शताब्दी में ईसाई मिशनरियों के आगमन और गाइदिन्ल्यू के सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन के बाद कई चीजों में जेमे नागाओं के सांस्कृतिक जीवन में व्यापक बदलाव आया है। लेकिन अभी भी डिमा हाचाओ, असम के अंदरूनी हिस्से प्राचीन जेमे परंपराओं की कई मूल विशेषताओं के साक्षी हैं। त्यौहारों की बात की जाए, तो जेमे नागा के त्यौहार असमीया रङाली और माघ बिहु के समान हैं।

बीजशब्द: *जेमे जनजाति, समाज, संस्कृति ।*

प्रस्तावना

जेमे नागा उत्तर-पूर्व भारत की मूल जनजातियों में से एक है। यह जनजाति उत्तर-पूर्व भारत के तीन राज्यों में फैली हुई है- नागालेंड डिमापुर और मणिपूर। नागालेंड में परेन ज़िला, मणिपूर में सेनापति और तमेंगलॉन्ग जिला और असम में नॉर्थ काछार हिल (वर्तमान में डिमा हाचाओ जिला) में इनकी स्थिति हैं। मौखिक परंपरा के अनुसार जेमे नागा, रोंगमेई नागा, लियंगमई नागा और पुइमे नागा एक ही पूर्वजों के वंशज थे। सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर कुछ शिक्षित युवाओं के एक समूह ने सन् 1940 के दशक में जेमे समूह से ज़ी, लियंगमई से लियांग और रोंगमेई से रोंग इन तीनों जनजातियों को मिलाकर ज़ैलियांग्रोंग (zeiliangrong) नामकरण किया और इस तरह एक ज़ैलियांग्रोंग जनजाति का गठन हुआ। जेमे नागा जनजाति से लोग प्रायः अपरिचित हैं। अतः इस जनजाति के बारे में विस्तार से अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। इस आलेख में जेमे नागा जनजाति के समाज और संस्कृति के बारे में चर्चा की गयी है।

अध्ययन की सीमाबद्धता को ध्यान में रखते हुए जेमे नागा जनजाति के पारम्परिक महत्व को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। जेमे नागा जनजाति के बारे में विस्तार से विचार करने से पहले जेमे नाम और जेमे नागा जनजाति के बारे में जानना आवश्यक है। यह अध्ययन मूलतः क्षेत्र अनुसंधान के आधार पर किया गया है। साथ ही कुछ अंग्रेजी ग्रन्थों की सहायता भी ली गयी है।

विश्लेषण

पूरे नागा समूह द्वारा दावा किया गया था कि ज़ैलियांग्रोंग पूर्वजों (जेमे, लियंगमई, रोंगमेई और पुइमे) ने माखेल (एक जगह का नाम) से पलायन किया था, जो मणिपुर के सेनापति जिले में स्थित है। जेमे, लियंगमई, रोंगमेई और पुइमे के पूर्वजों द्वारा मणिपुर के सेनापति जिले में मकुइलोंगडी नामक एक गाँव की स्थापना की गयी थी। वर्तमान समय में भी मकुइलोंगडी गाँव मणिपूर के सेनापति जिले में स्थित है। मकुइलोंगडी से वे विभिन्न दिशाओं में चले गए। जिस समूह को जेमे नागा नाम दिया गया, वह मकुइलोंगडी के उत्तर-पश्चिम में चला गया और बाद में अपने वर्तमान बसे इलाकों में बिखर गया।

जेमे नाम की उत्पत्ति के बारे में, कुछ लेखकों का कहना है कि मकुइलोंगडी से फैलाव के बाद जेमे समूह का सबसे पुराना गाँव सेनापति जिले में *जे-नुई* (ze-nui) नाम का एक गाँव है। माना जाता है कि जे-नुई' से ही जेमे नाम की उत्पत्ति हुई। जेमे नागा लोग ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करना पसंद करते हैं। जहाँ गर्म जलवायु होती है, वहाँ जेमे नागा रहना पसंद नहीं करते। वे ठंड के मौसम और ऊँचाईवाले स्थान पसंद करते हैं। यह घुमक्कड़ी

जनजाति नहीं है। वे जब एक बार एक स्थान को चुन लेते हैं, तो उसी स्थान पर बस जाते हैं। वे यथासंभव लंबे समय तक वहाँ रहते हैं। लेकिन कभी-कभी परिस्थितियाँ उन्हें गाँव छोड़ने और एक नया गाँव बनाने के लिए मजबूर करती हैं। महामारी या गाँव लूट लिया जाना आदि ऐसी ही परिस्थितियाँ हैं।

जेमे नागा का मुख्य भोजन चावल, मक्का, बाजरा आदि हैं। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। उन्हें जंगली जानवरों का शिकार करना भी पसंद है। जेमे नागा समाज के बीच कोई राजवंश नहीं था, इसलिए *पेडेईप्यू* (=जमींदार), *केल्लंप्यू* (=पुजारी) *हेलूटेटियमे* (=किसान) आदि शक्तिशाली और बहादुर आदमी मिलकर शासन करते थे और ग्रामीण लोग इनका सम्मान और आदर करते थे।

भूमि

जेमे नागा में विभिन्न प्रकार के भूमि मालिक होते हैं। जैसे कबीले की भूमि, सामुदायिक भूमि, वन भूमि आदि। इसलिए एक बार जब वे भूमि का चयन करते हैं, तब गाँव की स्थापना भी की जाती है। उस जगह पर गाँव की स्थापना के समय वहाँ *हरामम्पाउम* (=भूमि स्वामी), *टिकुपाऊ* (=पुजारी) और *बैज़ाम* (=जागीरदार) होना चाहिए। पुजारी को अनुष्ठान प्रक्रिया और बलिदान की जानकारी होनी चाहिए और सहायकों के पास ऐसी योग्यता नहीं हो सकती; पर वे गाँव में जागीरदार होने के हकदात हैं। जागीरदार जब तक एक ही गाँव में रहेंगे, तब तक अपनी खेती के लिए जमीन रखने की अनुमति दी जाती है; पर जब वे दूसरे गाँव चले जाते हैं, तब उन्हें जागीरदारी छोड़नी पड़ती है।

हरामम्पाउम और *टिकुपाऊ* को व्यक्तिगत रूप से समान माना जाता है। लोग *मताई* (मुख्य या प्रशासक) का चयन करते हैं और सभी आंतरिक विवादों का निपटारा कर एक शांतिपूर्ण माहौल बनाए रखते हैं। लेकिन जमींदार और मुख्य या प्रशासक धार्मिक मामलों में शामिल नहीं होते हैं। पुजारी का कर्तव्य है कि वे धार्मिक पूजा, संस्कार और अनुष्ठानों और गाँव के सभी कार्यों को संभाले। यहाँ तक कि पुजारी को ही लोगों का विवाह संपन्न करवाना और जोड़े को आशीर्वाद देना होता है।

असम के डिमा हाचाओ में जेमे नागा

जेमे नागा असम के डिमा हाचाओ जिले की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। जेमे नागा को डिमा हाचाओ के दक्षिणी क्षेत्र में बाँटा गया है। जेमे नागा, कचा नागाओं की उप-जनजातियों में से एक है। नागालेंड में रहने वाले जेमे खुद को ज़ेलियांग कहते हैं और मणिपुर की सीमाओं में रहनेवाले जेमि नागाओं को ज़ैलियांग्रोंग के नाम से जाना जाता है। मूल रूप से वे मणिपुर के बीच से नागालेंड चले गए और एन.सी. हिल्स (डिमा हाचाओ) के उत्तर-पूर्वी भाग में कछारी राजाओं की प्राचीन राजधानी में बस गए। वे कपिली नदी के किनारे तक भी बसे

थे । कछारी की सत्ता के पतन के साथ, जेमे आस-पड़ोस के शक्तिशाली अंगामी नागाओं के कारनामों का शिकार हो गए । परिणामस्वरूप, कुछ जेमे नागा पश्चिम की ओर चले गए और दियुंग घाटी से परे पहाड़ियों में बस गए । वे दोनों में से दो की जेमे बोली बोलते हैं और दो शताब्दियों से अधिक समय से अन्य जनजातियों जैसे- डिमाचा, कछारी, कूकी, हमार आदि के साथ शांति से रह रहे हैं ।

धर्म के आधार पर जेमे नागा समाज का विभाजन

असम में जेमे नागा को हेराका धर्म (=हिन्दू धर्म) और ईसाई धर्म के बीच विभाजित किया जा सकता है । 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ईसाई मिशनरियों के आने के बाद समाज का एक बड़ा हिस्सा धर्मांतरित हो गया था और पारंपरिक धर्म के साथ-साथ उन्होंने अपनी प्राचीन परंपराएँ और त्यौहारों को भी छोड़ दिया । पद्मभूषण से सम्मानित, समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी रानी माँ गाइदिन्ल्यू ने पारंपरिक रीति-रिवाजों, अन्धविश्वास आदि से समाज को मुक्त करके हेराका धर्म का स्वरूप गठन किया । 'हेराका' धर्म का अर्थ शुद्ध होता है । ईसाई समूह ने जेमे नागाओं से जुड़े त्यौहार, पारंपरिक धर्म, पारंपरिक पूजा अनुष्ठान प्रणाली आदि को त्याग दिया है; पर फिर भी हेराका समूह ने इन परंपराओं का कुछ संशोधन और सुधार किया था ।

गाँव की पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में उनके सामाजिक-सांस्कृतिक पूजा और त्यौहार आते हैं । उनके सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थान, पूजा, त्यौहार आदि एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । जेमे नागा के पारंपरिक जीवन-शैली की स्पष्ट तस्वीर केवल हेराका गाँवों में देखने को मिलती है । एक समय ऐसा भी आया, जब ईसाई समूह ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा को भी छोड़ दिया था । पर अब ईसाई समूह वाले भी पारंपरिक वेशभूषा का धारण फिर से करने लगे हैं । चर्च के वर्चस्व वाले गाँवों में जेमे संस्कृति की सही तस्वीर नहीं दिखती । हालांकि कुछ पारंपरिक प्रथाएँ हैं, जैसे कि न्यायिक प्रणाली, पारिवारिक वंश और मूल्य-प्रणाली, जिन्हें धार्मिक संबद्धता के परिवर्तन द्वारा मिटाया नहीं जा सकता है । इसलिए इन सभी परंपराओं को सभी जेमे नागा के गाँव में धार्मिक संबद्धता के बावजूद देखा जा सकता है ।

भाषा

जेमे नागा की अपनी एक अलग बोली है, जो कि लियंगमई और रोंगमेई की तुलना में बहुत अधिक है । कोई आश्चर्य नहीं कि जेमे और लियंगमई को एक साथ जोड़ा जाता है और नागालेंड में जेमे को ज़ेलियांग के रूप में जाना जाता है । जेमे नागा की खुद की लिपि नहीं है । अपने पड़ोसी समुदायों की तरह वह भी टिबेटो-

बर्मन (Tibeto-Burman) भाषा- समूह के अंतर्गत आता है।

त्यौहार

जेमे नागाओं ने जीवन को प्राकृतिक परिवेश के अनुकूल ढाला है । उनके पूर्वजों की धार्मिक परंपरा प्राकृतिक घटनाओं से प्रभावित है । जेमे नागा ख़ुद को प्रकृति के बहुत करीब मानते हैं। जेमे नागा की विशेषता, उनकी धार्मिक परंपरा, त्यौहार आदि कृषि-कर्मों से संबंध रखते हैं । वे विभिन्न कृषि-कर्मो में विभिन्न त्यौहारों, संस्कारों और अनुष्ठानों का पालन करते हैं । जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ईसाई मिशनरियों के आने के बाद, समाज का एक बड़ा हिस्सा धर्मांतरित हो गया और सभी प्राचीन परंपराओं और त्यौहारों को छोड़ दिया गया । हेराका धर्म के लोगों ने रानी माँ गाइदिन्ल्यू के नेतृत्व में धार्मिक परंपराओं का सुधार कर लिया। हालांकि, उन्होंने कुछ सुधारों के साथ सभी प्रमुख सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं, संस्थानों और प्रथाओं को बनाए रखा। सुधारों के कुछ मुख्य क्षेत्रों में पशु बलि, अंधविश्वास आदि शामिल हैं। पहले जमाने में जेमे नागाओं के पूर्वज विभिन्न देवताओं की पूजा अर्चना करते थे और विभिन्न पूजा अर्चना के लिए पशु पक्षियों की बलि देते थे। जबकि अब समाज और धार्मिक परंपराओं के सुधार के बाद केवल तिंग्वांग (=सार्वभौमिक भगवान) की प्रार्थना करते हैं। डिमा हाचाओ में जेमे नागा का बड़ा समूह हेराका का अनुयायी है। जेमे नागाओं के कुछ महत्वपूर्ण त्यौहार हैं, जिन्हें हेराका समूह द्वारा बनाए रखा गया और अब भी बड़ी धूम-धाम से ये मनाये जाते हैं। जेमे नागा के त्यौहारों में खान-पान, नृत्य, गीत-संगीत के साथ पारंपारिक ढोल बड़ी धूम-धाम से बजाते हैं। त्यौहारों के दिन सुबह जल्दी उठ कर किसी भी कार्य को करने से पहले नहा-धोकर बिना कुछ खाए पिये परमेश्वर तिंग्वांग की पूजा अर्चना की जाती है और उनसे सभी कार्यों की सफलता हेतु प्रार्थना की जाती है। खान-पान, गीत-संगीत के साथ-साथ भगवान के ध्यान को प्राथमिकता दी जाती है। जेमे नागा जनजाति के पाँच प्रमुख त्यौहार हैं -

1. *हेलेई न्गी* (Helei n'gi)
2. *न्चंग न्गी* (Nchang n'gi)
3. *पुअकपेट न्गी* (Puakpet n'gi)
4. *नसीम न्गी* (Nsim n'gi) और
5. *हेगा न्गी* (Hega n'gi)

अधिकांश अन्य भारतीय त्यौहारों की तरह ये सभी त्यौहार खेती के साथ जुड़े हुए हैं; क्योंकि पारंपरिक जेमे नागा जाति (हेराका समाज) मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करती है।

***हेलेई न्गी* (Helei n'gi)**

हेलेई-न्गी साल का प्रथम त्यौहार है । यह बुआई के पूर्व मनाया जानेवाला त्यौहार है। फसल उगाने से पहले परमेश्वर तिंग्वांग की पूजा अर्चना

की जाती है ताकि फसल अच्छी हो और कीड़े-मकड़ों से फसल की रक्षा हो सके । यह त्यौहार मार्च के महीने में मनाया जाता है । यह तीन दिनों के लिए मनाया जाता है । प्रातःकाल बिना कुछ खाए पीए मंदिर जाते हैं और फसल के बीज को कीड़े आदि से बचाने के लिए तथा फसल अच्छी होने के लिए तिंग्वांग से प्रार्थना करते हैं । मंदिर जाने के बाद पूरे दिन सब लड़कियाँ मिलकर शगुण के तौर पर घर-घर जाकर कुछ खाने-पीने की सामग्रियाँ इकट्ठा करती हैं । उसे *हैलेई हा हा बे* बोला जाता है। सब मिलकर पारंपरिक लोक-गीत के साथ लोक नृत्य आदि करते हुए इस त्यौहार को मनाते हैं । पुराने दिनों में बहुत सारे संस्कार, अनुष्ठान आदि किये जाने के साथ-साथ और पशु-बलि भी दी जाती थी । परंतु पारंपारिक रीति-रिवाजों के सुधार के बाद अब ये सब नहीं होते ।

***न्चंग न्गी* (nchang n'gi)**

न्चंग न्गी मई-जून के महीने में मनाया जाता है । ये बुवाई की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद मनाया जाता है । यह एक छोटा-सा त्यौहार है । *न्चंग* का अर्थ है आराम होना । खेतों की बुवाई व फसल उगाने के बाद और फसल की कटाई से पहले जो थोड़ा समय मिलता है, तब यह त्यौहार मनाया जाता है । इस त्यौहार में ग्रामीण लोग मंदिर जाते हैं और भगवान् तिंग्वांग से अपनी फसलों को कीड़े आदि से बचाने की प्रार्थना सर्वोपरि करते हैं ।

***पुअकपेट न्गी* (Puakpet n'gi)**

यह त्यौहार *न्चंग न्गी* त्यौहार के बाद मनाया जाता है । यह त्यौहार तीन दिन तक चलता है । *पुअकपेट न्गी* त्यौहार इस कामना से मनाया जाता है कि नयी फसल मिलने के बाद सब के घरों में सालों तक खाद्य-सामग्री की कमी न हो और नयी फसल मिलने से पहले परमेश्वर का आर्शीवाद माँगा जाता है ताकि खाद्य-सामग्री की कमी किसी को न हो । बारिश के दिनों में खाद्य-सामग्री की कमी हो जाती है, इन कमी की पूर्ति भी इस त्यौहार के बाद हो जाती है । *हेलेई न्गी* की तरह इस त्यौहार में भी सर्वप्रथम मंदिर जाकर परम पिता परमेश्वर तिंग्वांग की पूजा अर्चना की जाती है और मंदिर जाने के बाद सभी अपने घर लौट आते हैं । उसके बाद गाँव की सभी लड़कियाँ मिलकर सगुण के तौर पर घर-घर में कुछ खान-पान की सामग्रियाँ इकट्ठा करती हैं । उसे *हैलेई हा हा बे* बोला जाता है और सब मिलकर पारंपरिक लोक-गीत के साथ लोक-नृत्य आदि करते हुए इस त्यौहार को मनाते हैं ।

***नसीम न्गी* (nsim n'gi)**

इस त्यौहार को जवान लड़के और लड़कियों का त्यौहार कहा जाता हैं । इस त्यौहार के समय कटी हुई फसल सबके घरों में इक्कठा हो जाती है ।

यह त्यौहार पाँच दिनों तक मनाया जाता है। इस त्यौहार में लड़के व लड़कियाँ मिलकर गीत-संगीत, लोकनृत्य आदि करते हैं। उनके बीच नृत्य-गीत की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। छोटे-छोटे बच्चों को पारंपरिक लोक-नृत्य, लोक-गीत संगीत आदि सिखाया जाता है। इस त्यौहार में लड़कों व लड़कियों में अपनी पारंपरिक वेशभूषा पहनने की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। सभी जवान लड़के व लड़कियाँ अपने *मोरंग* (=ग्राम छात्र या छात्रावास) में गीत, संगीत आदि की प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं।

जेमे नागा के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के किसी भी पहलू पर चर्चा करते समय, *मोरंग* की भूमिका के बारे में विचार होना बहुत महत्वपूर्ण है। अविवाहित लड़के और लड़कियों के लिए *मोरंग* होता है। *मोरंग* एक पारंपरिक युवा क्लब है। लड़कों के आवास को *हंगसुकिया* (Hanseuki) कहा जाता है और लड़कियों के आवास को *लेसेयुकी* (Leuseuki) कहा जाता है। चूंकि गाँव के सभी युवाओं को समायोजित करने के लिए एक *मोरंग* पर्याप्त नहीं है, इसलिए किसी भी गाँव में दो या तीन *मोरंग* हो सकते हैं। पहले जमाने में जेमे नागा की प्रथा के अनुसार लड़का या लड़की को रात में अपने *मोरंग* या ग्राम छात्रावास में रहना पड़ता था। *मोरंग* जेमे युवाओं के व्यावहारिक जीवन में एक स्कूल की भूमिका भी निभाता है; क्योंकि *मोरंग* उन्हें आत्मनिर्भर तथा अनुशासित बनाता है। उनके आपसी अधिकारों की समझ में सुधार करता है और लडक़े अपने वरिष्ठों या गुरुओं से सामाजिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के साथ-साथ पारंपरिक संगीत, नृत्य, कला और शिल्प भी सीखते हैं। *मोरंग* में वरिष्ठ और कनिष्ठ सदस्यों के बीच 'गुरु-शिष्य' का संबंध होता है। *मोरंग* अपने गाँव के प्रति अच्छी सामाजिक जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य निभाता है। *मोरंग* के सदस्य वे आपात स्थिति के दौरान ग्राम प्रहरियों की भूमिका निभाते हैं तथा वे गाँव की पाइपलाइन, सड़कें आदि की सफाई भी स्वेच्छा से करते हैं। ग्रामीण लोगों को स्वैच्छिक सेवाओं के वितरण के संबंध में विभिन्न *मोरंग* के सदस्यों के बीच एक तरह की प्रतिस्पर्धा भी रहती है। अमीर लोग *मोरंग* के सदस्यों को खेत से लेकर गाँव तक के विविध कामों- फसल की कटाई करना, झूम को साफ करना, फसलों की बुआई के आदि के लिए नियुक्त कर सकते हैं। इन स्रोतों से होने वाली कमाई को *मोरंग* फंड में जमा किया जाता है, जिसे बाद में दावतों के लिए उपयोग किया जाता है। सभी प्रमुख त्यौहार जैसे- *नसीम न्गी, हेगा न्गी* आदि अपने-अपने *मोरंग* में मनाए जाते हैं और सामूहिक कार्यों से एकत्रित धन का उपयोग ऐसे अवसरों के दौरान किया जाता है। हालांकि, लड़की के मामले में उसका *मोरंग* के साथ ज्यादा लगाव नहीं है। वह अपना अधिकांश समय अपने माता-

पिता के साथ बिताती है। लड़कों की तरह लड़कियाँ भी पारंपरिक लोक नृत्य, गीत आदि सीखती हैं और वे अपने कनिष्ठों को लोक-गीत, संगीत, नृत्य आदि सिखाती हैं।

हेगा न्गी (Hega n'gi)

जेमे नागा के हेराका समाज में *हेगा न्गी* त्यौहार सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण तौहार माना जाता है। *हेगा न्गी* साल के अंतिम महीने में मनाया जाता है, यह त्यौहार साल का आखिरी त्यौहार है। *हेगा न्गी* का अर्थ है सबसे अच्छा और श्रेष्ठ। कहा जाता है कि जिस किसी भी व्यक्ति को इस त्यौहार को मनाने का मौका मिलता है, वह बहुत ही सौभाग्यशाली होता है और उसे भगवान तिंग्वांग का आशीर्वाद प्राप्त होता है। जेमे नागा समाज का प्रत्येक त्यौहार खेती के एक विशिष्ट चरण के साथ मेल खाता है। *हेगा न्गी* सबसे महत्वपूर्ण और सबसे रंगीन त्यौहार है। साल के आखिरी समय में जब खेतों के सभी अन्न, सब्जियाँ घरों में इक्ठ्ठा कर लेते हैं, तब यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दौरान खान-पान धूम-धाम से होता है। क्योंकि तिल, चावल, बाजरा, सब्जियाँ इत्यादि उस समय भरपूर होते हैं। उसी से तरह-तरह की खाद्य-सामग्रियाँ पकाई जाती हैं और खिलाई जाती हैं। *हेगा न्गी* दिसंबर और जनवरी को मनाया जाता है। जेमे नागा का हेराका समाज लूनर कैलेंडर का प्रयोग करते हैं, जिसके कारण यहाँ त्यौहार दिसंबर और जनवरी को पड़ता है। 5 दिनों तक चलने वाले इस त्यौहार को अलग-अलग रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। इस त्यौहार में पारंपरिक खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है, जिनमें लम्बी कूद और गोला फेंकना प्रमुख हैं।

संगीत और नृत्य हर त्यौहार का एक अभिन्न अंग हैं, जो हर त्यौहार को बहुत मजेदार और आनंदित करने वाले होते हैं। जेमे नागा के हेराका समाज के लोक गीत व नृत्य आम तौर पर समूहों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। महत्वपूर्ण त्यौहारों और घटनाओं के वर्णन और मनोरंजन के लिए भी लोक-नृत्य के साथ गाने गाये जाते हैं। पुरुष और महिला नृत्य और संगीत प्रदर्शन में भाग लेते हैं। *हेगा न्गी* में लोक-नृत्य व गान एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह त्यौहार पाँच दिन तक चलता है और पूरे पाँच दिन नृत्य, गीत और पारंपरिक ढोल बजाकर खुशी मनायी जाती है। *हेगा न्गी* शुरु होने से पाँच दिन पहले पूरे गाँव और अपने घरों की सफ़ाई की जाती है।

जेमे नागा के वाद्ययंत्र

जेमे नागा के वाद्ययंत्र हैं- *नसुम* (=ड्रम), न्टोई (=एक छोटा ताल), *मिटियाम* (=बाँसुरी), *न्नरा* (=वायोलिन) आदि।

जेमे नागा का खान-पान

किसी भी पहाड़ी समुदाय की तरह जेमे नागाओं का भी मुख्य भोजन चावल है। लगभग सभी जेमे नागा मांसाहारी होते हैं। वे वनस्पति, तेल पसंद नहीं करते हैं। चावल को केवल पानी में पकाया जाता है। वे मांस या मछली पकाते समय भी नमक, मिर्च और अन्य सामग्रियाँ जैसे कि अदरक, हल्दी, तेज पत्ता, लहसुन और अन्य घरेलू और जंगली दोनों तरह के पत्ते देते हैं। वे आमतौर पर सूखी मछली, बांस की नली में संग्रहित सूअर का तेल आदि का उपयोग करते हैं। वे जंगली और घरेलू दोनों तरह के जानवरों का मांस खाते हैं, हालांकि इस बात पर कई वर्जनाओं के साथ और प्रतिबंध भी हैं। उदाहरण के लिए हेराका संप्रदाय (=सुधार संप्रदाय) के अनुयायी कुत्ते और बिल्ली का मांस नहीं खाते। उन्हें जंगली जानवरों और पक्षियों के मांस, जैसे गिद्ध, चील, कौआ, उल्लू आदि खाने को को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है।

जेमे नागा के खान-पान में पारंपरिक शराब, जो चावल, बाजरा आदि से बनायी जाती है, भी जरूरी मानी जाती है। कोई भी पूजा या त्यौहार होता है, तब पारंपरिक शराब प्रसाद के रूप में ली जाती है। पारंपरिक शराब कई तरह के चावल से बनती है।

पारंपरिक वस्त्र

जब हम पारंपरिक पहनावे की बात करते हैं, तो पहली चीज जो दिमाग में आती है, वह है, कपड़ों की श्रेणियाँ। जेमे नागा के कपड़े दो तरह के होते हैं। एक जो सामान्य दैनिक जीवन में उपयोग किया जाता है और एक जो त्यौहार और अन्य विशेष अवसरों के दौरान उपयोग किया जाता है, जो अधिक रंगीन होता है। कपड़े भी लिंग के आधार पर विभाजित होते हैं। जेमे नागा आत्मनिर्भर हैं; क्योंकि वे कपास उगाते हैं और अपने कपड़ों की जरूरतों को पूरा करने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। पारंपरिक ग्रामीण समाज में जेमे केवल तीन रंगों के कपड़ों का उपयोग करते हैं - सफेद, काले और लाल। सफेद के अलावा जो प्राकृतिक रंग है, वे प्राकृतिक जड़ी बूटियों का उपयोग करके उन्हें काला और लाल रंग देते हैं। पड़ोसी समुदायों के लोगों के संपर्क में आने के बाद उन्होंने अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

सामान्य दिनों में महिलाओं के वस्त्र

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला अपने शरीर को ढकने के लिए तीन कपड़ों का इस्तेमाल करती है। साधारणतः दिन में वह *टेसू-नाइन* नामक एक साधारण सफेद कपड़े पहनती है। यह कमर के नीचे हिस्से के लिए होता है और एक *नगियनाइ* का टुकड़ा भी हो सकता है, जो नृत्य के दौरान इस्तेमाल किया जाता हैं। उसके शरीर के ऊपरी हिस्से को एक और टुकड़े से ढका जाता है, जिसे *पाइंगुम* कहा जाता है। यह उसके बगल से लिपटा

हुआ होता है, जो उसके शरीर को उसकी जांघ तक ढक देता है। उनके बाल और सिर भी कपड़े के एक टुकड़े से लिपटे हुए होते हैं। यह काले रंग का होता है।

आजकल पहनावे में परिवर्तन आ गया है, फ़ैशन के साथ-साथ सब में परिवर्तन आया है। जेमे नागा जनजातियों के लोग भी आजकल सूट-सलवार, कमीज़, पेंट आदि पहनने लगे हैं।

लड़कियों के कपड़े जो नृत्य और उत्सव में पहना जाता हैं

उत्सव और नृत्य के दौरान, लड़कियाँ कमर के निम्न भाग को एक बहुरंगी कपड़े के टुकड़े से ढक लेती हैं, जिसे *नगियनाइने* (Ngiangnine) कहा जाता है और कमर से लेकर बगल या छाती तक एक काले रंग के कपड़े के टुकड़े से लपेटा जाता है, जिसे *फ़ईमांग* (paimang) कहा जाता है। नृत्य करते समय *फ़ईमांग* के साथ फेलिट लपेट लिया जाता है, जो बेल्ट की तरह इस्तेमाल होता है।

आम दिनों में पुरुषों के पहनावा

आमतौर पर पुरुषों द्वारा *मपुनुंग-नी* (mpeunung ni) नामक सफेद सूती कपड़े का इस्तेमाल किया जाता है, जो घुटने के निचले हिस्से को ढका करता है। शरीर के ऊपरी हिस्से आमतौर पर नंगे रहते हैं। कभी वे अपने ऊपरी हिस्से को ढकने के लिए पारंपरिक शॉल का प्रयोग करते थे। आजकल लड़के पेंट, कमीज़ आदि पहनते हैं।

पुरुषों के कपड़े जो नृत्य और उत्सव में पहना जाता हैं

नृत्य करते समय पुरुष कमर के निम्न भाग में काले रंग के कपड़े का एक टुकड़ा पहनते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं। एक साधारण काला कपड़ा होता है और दूसरा कौड़ियों से बननेवाला कपड़ा। दोनों ओर दो या एक पट्टीवाला कपड़ा होता है। कौड़ियों को *हचेई* कहा जाता है, इसलिए इसे *हचेई-नी* कहा जाता है। पुरुष भी फेलिट का इस्तेमाल बेल्ट की तरह करते हैं।

आभूषण

जेमे नागा के कपड़ों के अलावा, त्यौहारों और नृत्य के दौरान उपयोग किए जाने वाले बहुत गहने हैं। जेमे युवाओं के अलग एक निशान है वह है, पुरुष और महिला दोनों के कान छेदे जाते हैं। कान का गहना पुरुष और महिला दोनों पहनते हैं। पारंपरिक समाज में, जैसा कि आज हेराका के अनुयायियों द्वारा अपनाया गया है, जन्म के तीसरे या पाँचवें दिन पर किए जाने वाले नामकरण समारोह में शिशु के कान को छेद दिया जाता है। उसे Ngaine / Buaraine (इयर-रिंग) नामक एक गोल ताम्बा के तार से बनाया जानेवाला पहना दिया जाता है।

कान के कुछ महत्वपूर्ण आभूषण नीचे दिए गए हैं।

जौहाइन ने

सामान्यतः कान में पहनने वाले आभूषणों में से *जौहाइन ने* प्रमुख है । यह रंगीन *नजाई केन* (=जंगली पक्षी के पंख), *हेकुंग* (=सूखे आर्किड orchid) तने आदि से बनाता है । इसका उपयोग पुरुष और महिला दोनों द्वारा किया जाता है ।

ताऊचन / तौरांग

यह रंगीन सूत, *नजाई* (=जंगली पक्षी) *हेकुंग* आदि से बनता है । इसके साथ एक छड़ी या हैंडल तय किया जाता है, ताकि कान के छेद में आराम से डाला जा सके ।

नजाईके

यह आभूषण एक विशेष पक्षी के पंख से बनाता है, जिसे *नजाई* (=नीले और हरे रंग में) कहा जाता है । पक्षी के पंख और धागों से कान की बाली बनायी जाती है । यह त्यौहारों में पहना जाता है ।

माला

पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं के लिए भी कई तरह की मालाएँ होती हैं । कुछ महत्वपूर्ण मालाएँ हैं-

हेतुबा

यह आभूषण शंख और कुछ पत्थर के मोतियों से बनाया जाता है । यह धन और प्रतिष्ठा दोनों के मामले में सबसे महंगा है । यह उन लोगों के लिए गौरव का कारण है, जो त्यौहारों के दौरान पहनते हैं और प्रदर्शित करते हैं । यह मोतियों, मकई के खोल, अर्ध कीमती पत्थर आदि से बनता है ।

तेलातेउ

यह महिला का विशेष प्रकार का हार है । अगर *हेतुबा* पुरुष का सबसे कीमती आभूषण है, तो *तेलातेउ* महिला का सबसे कीमती आभूषण है। एक ही प्रकार के कच्चे माल से दोनों आभूषण बनते हैं, लेकिन *तेलातेउ* की लंबाई *हेतुबा* की तुलना में अधिक है ।

मिगुआंग काम

मिगुआंग की कई किस्में हैं, जो पुरुष और महिलाएँ दोनों के द्वारा पहने जाते हैं । जैसे- *बदामची-तेउ* (शर्ट / पैंट के सफेद बटन से बनी), *टिरियाम तेउ, चीकू*-काफिटबे *तेउ* आदि । वे गर्दन के चारों ओर बंधे होते हैं ।

टिरियाम तेउ

यह एक धागा द्वारा छोटे मोतियों के टुकड़ों को एक साथ जोड़कर बनाया जाता है । इसका उपयोग केवल महिला द्वारा किया जाता है ।

चीकू-काफिटबे तेउ

यह एक धागे के साथ कौड़ियों के छोटे टुकड़ों को एक साथ जोड़कर बनाया जाता है और फिर इसे गोल करने के लिए एक तार से जोड़ा जाता है । इसका उपयोग केवल पुरुष द्वारा किया जाता है ।

केवल पुरुष द्वारा उपयोग की जाने वाली सजावटी सामग्री

हकी

यह गन्ने के रंग का एक जंगली प्राकृतिक तार से बनाया जाता है। दोनों सिरों में एक गोल बनाने और एक घुटने और बछड़े के बीच फिट होने के लिए जोड़ कर बनाया जाता हैं। प्रत्येक पैर पर 50-100 तक ऐसे तार का उपयोग किया जा सकता है।

तेकुई मपीबे

यह एक चावल का चूरन होता है, जिसे घुटने के नीचे दोनों पैरों पर लगाया जाता है और एड़ी को टखने तक सफेद होने तक सूखने के लिए बनाया जाता है।

हेरे मी

पुरुषों द्वारा सिर पर हॉर्नबिल के पंख का उपयोग किया जाता है। नृत्य के दौरान पुरुष और महिला भी इसका उपयोग करती है। नृत्य करते समय नर्तक-नर्तकी-दोनों उनके हाथों में धारण करते हैं।

हेपुआगिम ता

यह हाथ का एक कंगन है, जिसका इस्तेमाल पुरुष करते हैं। यह हाथी की सूंड से बना होता है, इसलिए इसका नाम *हेपुआगिम* (=हाथी की सूंड) ता (=ब्रेसलेट) कहते हैं।

केवल महिलाओं द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली अन्य सजावटी सामग्री

पुरुष की तरह जेमे महिलाओं के पास भी कुछ विशेष सजावटी सामग्रियाँ होती हैं।

टेसिटा

यह एक चूड़ी है, जो बेल धातु से बनी है और कलाई में पहनी जाती है।

ईकिता

टेसिटा के समान, यह भी बेल धातु से बनता है। *ईकिता* सींग की तरह बना होता है, जो *टेसिटा* में नहीं होता है।

पारंपरिक शॉल

मैदानी लोगों के संपर्क में आने से पहले जेमे नागा के पास रंग के विकल्प नहीं थे। ये साधारण सफेद सूती शॉल, *पैथिक* (=एक काला शॉल), *पैताई थी* आदि का प्रयोग करते थे, जो काले, लाल और सफेद आदि रंगों के मिश्रण से बनते थे। लेकिन मैदानों के संपर्क में आने के बाद जेमे महिलाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के शॉल बुने जाते हैं। कुछ प्रसिद्ध शॉलों में शामिल हैं- *मपक-पै* (=विशेष रूप से केवल पुरुष द्वारा इस्तेमाल किया जानेवाला), *लुहे-पै, प्रेन-पै, नगुमथो पई* आदि।

विवाह समारोह

विवाह पुरुष और महिला के मिलन का त्यौहार होता है। इससे दोनों के समर्पित दिल वैवाहिक संबंधों के मोह में बंध जाते हैं। जेमे समाज में, परिवार के द्वारा तय किया गया विवाह और प्रेम-विवाह दोनों विवाहों को कानूनी रूप से स्वीकार किया जाता है। अगर एक लड़का, एक लड़की को उसके साथ भाग के विवाह करने के लिए

मना लेता है, तो यह गर्व की बात होती है । जेमे परंपराओं में दहेज का भुगतान दूल्हे के घर द्वारा किया जाता है । किसी भी विवाह का दहेज-दर दोनों वर और वधु पक्षों के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा निर्णित होता है । दहेज की आलोचना के लिए निश्चित दिन तथा समय पर दोनों पक्ष दुल्हन के स्थान पर एकत्र होते हैं और मोलभाव करते हैं । दुल्हन की कीमत के रूप में नकद, घरेलू मवेशियों, गहने आदि दिये जाते हैं । शादी के दिन, दुल्हन अपने साथ विभिन्न पारंपरिक शॉल, मांस, पेय आदि लेकर दुल्हे के घर आती है । वह दूल्हे के घर के सदस्यों को अपनी चूड़ियाँ और अन्य गहने भी देती हैं । दिये गये कपड़े और अन्य गहने दुल्हा पक्ष की बेटियों और अन्य महिला रिश्तेदारों द्वारा वितरित किए जाते हैं । हालांकि, सुधारे गये समाज के बाद दुल्हन की कीमत की दर सिर्फ प्रतीकात्मक भुगतान के लिए तय की गई है । वर-वधू का मोलभाव करने की पुरानी परंपरा अब चलन में नहीं है ।

आर्थिक गतिविधियाँ

जेमे नागा का प्रधान भोजन चावल है । विभिन्न प्रकार के चावल के अलावा, मक्के की खेती भी की जाती है । *हेरा* (=बीन का एक प्रकार जिसे, नागा दाल भी कहा जाता है), कद्दू, लौकी, अदरक, हल्दी, मिर्च, कपास आदि की सब्जी की खेती की जाती है । ये खेती उनकी अर्थव्यवस्था को पर्याप्त मजबूत करती हैं । अधिकांश जेमे नागा अभी भी झूम खेती करते हैं । उन के आबाद-क्षेत्र पहाड़ी इलाके होते हैं । अतः उनकी अवस्थिति उन्हें अन्य तरीक़े की खेती को अपनाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं । इन दिनों कुछ व्यावसायिक फसलें, जैसे अदरक और अन्य सब्जियाँ, कुछ क्षेत्रों में चावल की खेती की जगह ले रही हैं । लेकिन चावल की खेती का महत्व अभी भी बना हुआ है ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जाए तो जेमे नागा अपनी पारंपरिक संस्कृति और परंपरा के धनी हैं । असम के डिमा हाचाओ में जेमे की आबादी को दो भागो में विभाजित किया गया है । नागालेंड के पेरेन जिला, तामेंगलोंग और मणिपुर के सेनापति जिले के कुछ हिस्सों और डिमा हाचाओ के पूर्वी भाग जेमे आबाद क्षेत्र हैं । कुछ कुकी गाँवों को छोड़कर, मणिपुर और नागालेंड की सीमा तक के ऐतिहासिक सेमखोर गाँव का क्षेत्र जेमे की आबादी से भरे हैं । डिमा हाचाओ के जेमे कॉम्पैक्ट क्षेत्रों को दूसरा भाग हाफ़लोंग शहर के पश्चिम में स्थित क्षेत्र है । हाफलोंग शहर में कुछ कॉलोनियों से शुरू हुई थी । जेमे क्षेत्र मेघालय सीमा तक विस्तृत है । पश्चिमी जेमे क्षेत्रों में उनके पड़ोसी बाएटे, ह्रांगखल और डिमाचा हैं । अगर कोई अलग-अलग समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को देखता है, तो डिमाचा और जेमे दोनों एक दूसरे के करीब हैं ।

डिमाचा और जेमे समूहों द्वारा किए गए संस्कारों और अनुष्ठानों में कई समानताएँ पाई जाती हैं।

बंगलाबांग और उसकी संतानों द्वारा ब्रह्मांड के निर्माण की कहानी और सुधार के दिनों में जेमे नागा की बहुदेववादी धार्मिक परंपराओं की जड़ें कई मायनों में डिमाचा के समान हैं। विभिन्न देवताओं के नाम और उन देवताओं को दिए गए वर्ण भी समान हैं। माना जाता है कि ऐतिहासिक सेम्खोर गाँव के निवासी, जेमे और डिमाचा के मिश्रित रक्त के लोग थे। हालांकि राजनीतिक दृष्टि से उनमें बहुत बड़ा अंतर है। डिमाचा एक समय में उनके सम्राट के अधीन थे। अन्य नागा जनजातियों की तरह जेमे शुरू से ही ग्राम गणराज्य के लोग रहे हैं। 19वीं शताब्दी में ईसाई मिशनरियों के आगमन और गाइदिन्ल्यू के सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन के बाद कई चीजों में जेमे नागाओं के व्यापक सांस्कृतिक जीवन में बदलाव आया है। लेकिन अभी भी डिमा हाचाओ, असम के भीतरी हिस्से प्राचीन जेमे परंपराओं की कई मूल विशेषताओं के साक्षी हैं। त्यौहारों की बात की जाए तो जेमे नागा के त्यौहार असम के बिहु और मकर संक्रांति आदि से मिलते जुलते त्यौहार हैं।

ग्रंथ-सूची :

Jeme, Allan. Zeme Naga customery Practice. North cachar Hill Autonomous Council Judicial Department, 2004

Panme, Inchekambe. The Naga North Cachar Hill (Assam), Nianglua Luangria Zeme Students' Union,Assam, 2015

Tingwang Hinde (in zeme). Zeiliangrong Heraka Association: North East India,2019

Zeiling,N.C. Zeiliangrong Heraka Preacher Hand Book. N.C. Zeiling,1998

Heraka Hegia Hinde .Zeiliangrong Heraka Association: North East India,2017

संपर्क-सूत्र:
बोरो हाफलङ
डिमा हाचाओ जिला, असम
ई-मेइल: kedeireihunglenriame2314@gmail.com
मोबाइल : 9476655854